पंजीकरण सं. आर.एन. 40596/83 डाक पंजी. संख्या-जी-3-डी.एल. (एन.)/084/24-26 प्रकाशित 01.02.2026 इस अंक का मूल्य 2 रूपये

॥ ओ३म् ॥

युवा उद्घोष

केन्द्रीय आर्य युवक परिषद् (पंजीकृत) का पाक्षिक शंखनाद

Join—http://www.facebook.com/groups/aryayouth/

कार्यालय : आर्य समाज कबीर बस्ती, दिल्ली-*110007*, चलभाष : 9810117464, 9868051444

दानदाताओं से अपील

केन्द्रीय आर्य युवक परिषद् के कार्य व गतिविधियों में सहयोग करने हेतु **खाता संख्या 10205148690 स्टेट बैंक आफ इण्डिया,** घन्टाघर, दिल्ली– 110007, **आई. एफ. एस. कोड** SBIN0001280 पर सीधे भेज कर हमें फोन न. **9810117464** पर एस.एम.एस कर दें या **9868051444** पर googlepay कर दें।

–अनिल आर्य

वर्ष-42 अंक-17 माद्य-2082 दयानन्दाब्द 201 01 फरवरी से 15 फरवरी 2026 (प्रथम अंक) कुल पृष्ठ 4 वार्षिक शुल्क 48 रु.

प्रकाशित: 01.02.2026, E-mail : yuva.udghosh1982@gmail.com aryayouthgroup@yahoogroups.com Website : www.aryayuvakparishad.com

॥ ओ३म् ॥

केन्द्रीय आर्य युवक परिषद् के तत्त्वावधान में

202वां महर्षि दयानन्द जन्मोत्सव

वीरवार 12 फरवरी 2026, प्रात: 10.00 से 01.30 बजे तक

स्थान: आर्य समाज वेस्ट पटेल नगर, नई दिल्ली-08 (निकट मैट्रो स्टेशन पटेल नगर)

मुख्य अतिथि- **सुश्री बांसुरी स्वराज** (संसद सदस्य)

विशेष अतिथि- **श्री राजकुमार आनन्द** (विधायक) व **डॉ. शैली ऑबरोय** (निगम पार्षद)

अध्यक्षता: श्री नरेन्द्र आर्य सुमन (प्रधान आर्य समाज रमेश नगर)

यज्ञ ब्रह्मा- आचार्य गवेन्द्र शास्त्री

मधुर भजन: प्रवीन आर्य 'पिंकी' व विजय पाहुजा

प्रवचन- डा. जयेन्द्र आचार्य (नोएडा)

गरिमामयी उपस्थिति

श्री आनन्द चौहान (निदेशक एमेटी संस्थान)
ठाकुर विक्रम सिंह (अध्यक्ष राष्ट्र निर्माण पार्टी)
श्री डालेश त्यागी (प्रधान आर्य समाज विकासपुरी)
श्री रवि चड्डा (प्रधान आर्य समाज पूर्वी पंजाबी बाग)
श्री आर.पी. सूरी (पूर्व प्रधान आर्य समाज पंजाबी बाग एक्स.)
श्री अमरनाथ बत्रा (आर्य समाज सुन्दर विहार)
श्री मनोज मान (समाजसेवी खेड़ा खुर्द)
श्रीमती राधा भारद्वाज (समाजसेवी सुल्तानपुरी)
श्री राजेन्द्र लाम्बा (पूर्व प्रधान आर्य समाज पश्चिम विहार)
श्री जीवन लाल आर्य (मन्त्री आर्य समाज अशोक विहार-फेस-1)
श्री अमर सिंह सहरावत (मन्त्री आर्य समाज उत्तम नगर)
श्री जितेन्द्र खरबन्दा (प्रधान आर्य समाज कीर्ति नगर)
श्री ओम सपरा (प्रधान उत्तरी दिल्ली वेद प्रचार मण्डल)
श्री राजेश मेहन्दीरता (प्रधान आर्य समाज लाजपत नगर)
श्री यशपाल आर्य (प्रधान आर्य समाज महावीर नगर)
श्री यशपाल आर्य (मन्त्री आर्य समाज बी ब्लॉक जनकपुरी)
श्री ओम प्रकाश अरोड़ा (प्रधान आर्य समाज राजौरी गार्डन)
श्रीमती इन्द्रा शर्मा (मन्त्री आर्य समाज इन्द्रपुरी)
श्री राकेश ग्रोवर व माता शीला ग्रोवर
श्रीमती सन्तोष बधवा, राकेश महल्होत्रा, शान्ता तनेजा
श्रीमती कुसूम भंडारी (प्रधाना आर्य समाज दिलशाद गार्डन)
श्री आदर्श आहूजा (मन्त्री आर्य समाज माडल बस्ती)
श्री सुशील बाली (प्रधान आर्य समाज देव नगर)
श्री ओमप्रकाश धुपड़ (आर्य समाज मोती नगर)

प्रीतिभोज दोपहर 1.30 बजे से-प्रबन्धक रोहित कुमार सिंह व सुमित आर्य। आप सादर आमन्त्रित हैं।

निवेदक:- **अनिल आर्य** (राष्ट्रीय अध्यक्ष) **जितेन्द्र आर्य** (स्वागताध्यक्ष) **धर्मपाल आर्य** (राष्ट्रीय कोषाध्यक्ष) **महेन्द्र भाई** (राष्ट्रीय महामन्त्री)

स्वागत समिति: **सर्वश्री दुर्गेश आर्य, प्रवीण आर्य, सुरेश आर्य, रामकुमार सिंह, देवेन्द्र भगत, नेत्रपाल आर्य, प्रकाशवीर शास्त्री, वेदप्रकाश आर्य, सुमित आनंद, सुषमा आहूजा, कान्ता आर्या, स्नेह तुली जी, शशि सचदेवा, संजीव आर्य, गोपाल जैन**

आर्यसमाज धामावाला देहरादून का रविवारीय सत्संग

महर्षि दयानन्द भारत को वैदिक राष्ट्र बनाना चाहते थे- आचार्य अनुज शास्त्री

—मनमोहन कुमार आर्य, देहरादून

रविवार दिनांक 25–1–2026 को आर्यसमाज धामावाला, देहरादून के साप्ताहिक सत्संग में हम सम्मिलित हुए। समाज मन्दिर में प्रातः 8.30 बजे से यज्ञ सम्पन्न करके सत्संग का आरम्भ किया गया। यज्ञ के बाद भजन, इसके पश्चात सामूहिक प्रार्थना और ऋषि दयानन्द जी के पं. देवेन्द्रनाथ मुखोपाध्याय रचित जीवन चरित से कुछ अंशों का पाठ किया गया। आज का व्याख्यान आर्यसमाज के युवा विद्वान आचार्य अनुज शास्त्री जी का था। आचार्य जी ने दिनांक 26 जनवरी, 2026 को गणतन्त्र दिवस को सम्मुख रखकर आर्यसमाज की राष्ट्रवादी विचारधारा को केन्द्र में रखकर अपने विचारों को प्रस्तुत किया। आचार्य जी ने कहा कि देश में हिन्दी चीनी भाई भाई का जो नारा दिया गया था वह गलत था। उन्होंने कहा कि कुछ शताब्दियों पहले चीन के सैकड़ों वा हजारों लोग भारत में विद्या प्राप्त करने आते थे और तक्षशिला व नालन्दा आदि विश्वविद्यालयों वा गुरुकुलों में विद्या ग्रहण कर अपने देश को लौट जाते थे। आचार्य जी ने कहा कि चीन हमारा शिष्य तो कहा जा सकता था परन्तु हिन्दी व चीनी भाई भाई का नारा लगाना गलत था। उन्होंने कहा कि यदि हम अपने शिष्य को भाई कहेंगे तो वह अपना अधिकार मागेंगा और इस कारण से हिन्दी चीनी भाई भाई का नारा गलत सिद्ध होता है। आचार्य जी ने राजनेता श्री राम मनोहर लोहिया और चौधरी चरण सिंह जी का उल्लेख किया और उनके विचारों व कार्यों की प्रशंसा की।

आचार्य अनुज शास्त्री जी ने बताया कि आर्यसमाज ने वर्ष 1969 में आर्यसमाज द्वारा मूर्तिपूजा पर काशी शास्त्रार्थ की शताब्दी पर कार्यक्रम का आयोजन किया था। आर्यसमाज ने इसमें मूर्तिपूजा करने वाले मतों के विद्वानों को शास्त्रार्थ के लिये आमंत्रित किया था परन्तु मूर्तिपूजा का समर्थक कोई विद्वान शास्त्रार्थ करने नहीं आया। आचार्य जी ने बताया कि इस आयोजन में चौधरी चरण सिंह जी का मूर्तिपूजा की अवैदिकता पर 1 घंटे का भाषण हुआ था। आचार्य अनुज शास्त्री ने हिन्दू राष्ट्र की चर्चा की और इसे गलत बताते हुए कहा कि हमें वैदिक राष्ट्र का नारा लगाना चाहिये। उन्होंने वैदिक राष्ट्र के पक्ष में अनेक तर्क दिए। उन्होंने कहा कि भारत के वैदिक राष्ट्र बनने पर समाज बेहतर बनेगा। आचार्य जी ने कहा कि ऋषि दयानन्द के समय में व उनसे पूर्व हजारों ऐसे विद्वान हुए जिन्हें वेद कण्ठस्थ थे। ऐसे विद्वानों में से कोई एक भी वैदिक राष्ट्र बनाने की कल्पना नहीं कर सका। आचार्य जी ने कहा कि हमारे पांच शंकराचार्यों ने पांच प्रकार के मत चलाये हैं। आचार्य जी ने इन मतों के नामों का भी उल्लेख किया। आचार्य जी ने आगे कहा कि दक्षिण भारत में अनेक गुरुकुल संचालित होते हैं जहां 300 से 400 तक ब्रह्मचारी अध्ययन करते हैं। इन गुरुकुलों के अनेक विद्यार्थियों ने वेदों को कण्ठस्थ किया है परन्तु इन विद्यार्थियों को सत्य वेदार्थ का ज्ञान नहीं है। आचार्य जी ने बताया कि ऋषि दयानन्द को वेद ऐसे ही वेदपाठी ब्राह्मणों के द्वारा प्राप्त हुए थे। आचार्य जी ने कहा कि यदि ऋषि दयानन्द के पूर्ववर्ती आचार्यों द्वारा वेदों के सत्य अर्थों का प्रचार किया गया होता तो देश में अज्ञान, अन्धविश्वास और पाखण्डों का विस्तार न होता। आर्यसमाज के विद्वान आचार्य अनुज शास्त्री जी ने कहा कि देश में सर्वत्र मदिरालय स्थापित थे जहां देश के लोग मदिरा क्रय करके मदिरा का पान करते थे परन्तु हमारे किसी शंकराचार्य ने इन मदिरालयों के विरुद्ध कभी कोई आन्दोलन नहीं किया। उन्होंने कहा कि हमारे किसी शंकाराचार्य ने कभी किसी सामाजिक बुराई के विरुद्ध भी आन्दोलन नहीं किया। आचार्य जी ने कहा कि हमारे शंकराचार्य अपनी निजी समस्याओं को लेकर आन्दोलन करते हैं परन्तु वह समाज के सुधार के लिये बुराईयों का विरोध नहीं करते।

आचार्य अनुज शास्त्री जी ने कहा कि महर्षि दयानन्द जी की पुस्तकें आज भी क्रान्तिकारी युवकों को पैदा कर रहीं हैं। आचार्य जी ने श्रीपाद् दामोदर सातवलेकर का जी का उल्लेख किया और कहा कि चारों वेदों के भाष्यकार श्री दामोदर सातवलेकर ने काशी जाकर संस्कृत व्याकरण का अध्ययन किया था। सातवलेकर जी ने ऋषि दयानन्द जी के ग्रन्थों का भी अध्ययन किया था। सातवलेकर जी ने अध्ययन पूरा करके 'वैदिक प्रार्थनाओं की ओजस्विता' पर 24 पृष्ठों का एक लेख लिखा था। उनका यह लेख समाचार पत्र 'विश्ववृत्त' के एक अंक में प्रकाशित हुआ था। सातवलेकर जी जानते थे कि इस लेख से समाज में क्रान्ति उत्पन्न होगी। इस लेख को समकालीन अनेक युवाओं ने पढ़ा और उससे देश प्रेम एवं स्वराज्य की प्रेरणा ली। अंग्रेजों ने इस लेख का संज्ञान लिया और लेख के प्रकाशक, सम्पादक और मुद्रक को पकड़ लिया था और उन पर राजद्रोह का मुकदमा चलाया था। लेख के प्रकाशक व मुद्रक इन बन्धुओं को ढाई वर्ष का कारावास दिया गया था। सातवलेकर जी को भी ढूंढा गया। वह गुरुकुल कांगड़ी से बंदी बनाये गये थे। समाचार पत्र की बची हुई सभी प्रतियों को अंग्रेजों ने जला दिया था। आचार्य जी ने कहा कि राष्ट्र का पहला उद्देश्य 'स्वराज्य' होना चाहिये। यह बात सातवलेकर जी ने अपने लेख में अनेक वेदमंत्रों का उल्लेख कर लिखी थी। उन्होंने लिखा था कि हमें हर प्रकार से स्वराज्य को प्राप्त करना चाहिये।

आचार्य अनुज शास्त्री जी ने बताया कि सन् 1908 में 'स्वयं सेवक' शब्द का पहली बार प्रयोग हुआ। उन्होंने बताया कि सब राष्ट्रभक्तों ने सातवलेकर जी के लेख से स्वयं सेवक बनने की प्रेरणा ली थी। सातवलेकर जी का यह लेख श्री केशव बलीराम हेडगेवार जी के हाथों में भी लगा। इसकी प्रेरणा से उन्होंने राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ संगठन के गठन का कार्य किया। आचार्य जी ने बताया कि श्री केशव बलिदाम हेडगेवार जी के पिता बलिराम जी आर्यसमाजी थे। वह पुरोहित का कार्य करते थे। हेडगेवार जी ने वीर दामोदर सावरकर जी से भी प्रेरणा ग्रहण की थी। आचार्य जी ने आरएसएस के गठन में ऋषि दयानन्द के विचारों का योगदान बताया। उन्होंने कहा कि श्री केशव बलिराम हेडगेवार आर्यसमाजी थे। आचार्य जी ने कहा कि हेडगेवार जी के बाद श्री माधव सदाशिवराव गोलवलकर जी आरएसएस के सरसंघचालक बने। उनके आदर्श स्वामी विवेकानन्द जी थे। इसी कारण आरएसएस ने स्वामी विवेकानन्द को अपना आदर्श बनाया। आचार्य अनुज शास्त्री जी ने बताया देश के लिए बलिदान देने वाले प्रसिद्ध कांन्तिकारी युवक भगतसिंह के अन्दर भी स्वामी दयानन्द जी की प्रेरणा काम कर रही थी। आचार्य जी ने भगतसिंह जी के बारे में विस्तार से अपने विचार प्रस्तुत किए। आचार्य जी ने भगतसिंह जी की जेल डायरी के छपने की चर्चा की। उन्होंने बताया कि पंजाब का लाहौर क्रान्तिकारियों तथा आर्यसमाज का गढ़ था। पंजाब में आर्यसमाजी लगभग पांच प्रतिशत थे। भगत सिंह जी ने अपनी जेल डायरी में लिखा है कि राष्ट्र भक्ति की सभी गतिविधियां पंजाब में आर्यसमाजी ही चलाते थे। विद्वान वक्ता ने बताया कि भगतसिंह जी का बचपन में यज्ञोपवतीत संस्कार उनके दादा अर्जुन सिंह जी ने कराया था और इसे आर्यसमाज के पुरोहित पं. लोकनाथ तर्कवाचस्पति जी ने किया था। आचार्य जी ने बताया कि भगतसिंह जी आर्यसमाज के विद्वान पं. उदयवीर शास्त्री जी से पढ़े थे। भगतसिंह जी आर्यसमाज के कई और शिक्षकों से भी अपने विद्यार्थी जीवन में पढ़े थे। आचार्य जी ने कहा कि भगत सिंह जी के भीतर ऋषि दयानन्द जी का चिन्तन कूट–कूट कर भरा हुआ था।

आचार्य अनुज शास्त्री जी ने कहा कि महर्षि दयानन्द भारत को वैदिक राष्ट्र बनाना चाहते थे। विद्वान आचार्य ने कहा कि विचार मनुष्यों को महान बनाते हैं और बुरे विचार मनुष्यों को नीचे भी गिराते हैं। आर्यसमाज के विद्वान अनुज शास्त्री ने कहा कि हमें गायों को बचाने के लिये आगे बढ़कर काम करना चाहिये। आचार्य जी ने देश को वैदिक राष्ट्र बनाने पर बल दिया। आचार्य जी ने आगे कहा कि भारत हिन्दू राष्ट्र चाहे बने या न बने परन्तु भारत को वैदिक राष्ट्र बनना चाहिये। वैदिक राष्ट्र की विशेषता बताते हुए आचार्य जी ने कहा कि वैदिक राष्ट्र में कोई शराबी, चोर, कंजूस मांसाहारी और व्यभिचारी नहीं होता। आचार्य जी ने वेदानुयायी महाराजा अश्वपति जी की घोषणा को संस्कृत के शब्दों में अपने ओजस्वी स्वरों में प्रस्तुत किया। आचार्य जी ने अपने व्याख्यान में महाराज युधिष्ठिर जी के अश्वमेध यज्ञ का भी उल्लेख किया और बताया इस यज्ञ में अमेरिका, कान्धार और अनेक देशों के राजाओं ने यधिष्ठिर जी को अपना सम्राट माना था। आचार्य अनुज शास्त्री जी ने कहा कि भारत की सेना सबसे गौरवमयी सेना है। गलवान में भारत के सैनिकों के शौर्य का वर्णन भी आचार्य जी ने अपने व्याख्यान में किया। आचार्य जी ने कहा कि जब वेद के आधार पर वैदिक राष्ट्र बनेगा तभी विश्व में सुख व शान्ति स्थापित होगी। आचार्य जी ने सभी श्रोताओं को वेदों की शिक्षाओं को जन जन तक पहुंचाने की प्रेरणा की।

आर्यसमाज के प्रधान श्री सुधीर गुलाटी ने आचार्य अनुज शास्त्री जी का आज के सुन्दर व प्रेरणादायक सम्बोधन के लिये धन्यवाद किया। आर्यसमाज के नियमों के पाठ तथा शान्ति पाठ के साथ आज का सत्संग समाप्त हुआ। आज के सत्संग में बड़ी संख्या में स्त्री व पुरुष सम्मिलित हुए। – फोन:09412985121

मेजर सोमनाथ शर्मा (31 जनवरी –जन्मदिन)

आज कश्मीर का जो हिस्सा भारत के पास है, उसका श्रेय जिन वीरों को है, उनमें से मेजर सोमनाथ शर्मा का नाम अग्रणी है...31 जनवरी, 1922 को ग्राम डाढ (जिला धर्मशाला, हिमाचल प्रदेश) में मेजर जनरल अमरनाथ शर्मा के घर में सोमनाथ का जन्म हुआ। इनके गाँव से कुछ दूरी पर ही प्रसिद्ध तीर्थस्थल चामुण्डा नन्दिकेश्वर धाम है। सैनिक परिवार में जन्म लेने के कारण सोमनाथ शर्मा वीरता और बलिदान की कहानियाँ सुनकर बड़े हुए थे। देशप्रेम की भावना उनके खून की बूँद–बूँद में समायी थी...इनकी प्रारम्भिक शिक्षा नैनीताल में हुई थी। इसके बाद इन्होंने इण्डियन मिलट्री कॉलेज, देहरादून से सैन्य प्रशिक्षण लिया 22 फरवरी 1942 को इन्हें कुमाऊँ रेजिमेण्ट की चौथी बटालियन में सेकण्ड लेफ्टिनेण्ट के पद पर नियुक्ति मिली। इसी साल इन्हें डिप्टी असिस्टेण्ट क्वार्टर मास्टर जनरल बनाकर बर्मा के मोर्चे पर भेजा गया। वहाँ इन्होंने बड़े साहस और कुशलता से अपनी टुकड़ी का नेतृत्व किया...15 अगस्त, 1947 को भारत के स्वतन्त्र होते ही देश का दुखद विभाजन भी हो गया। जम्मू कश्मीर रियासत के राजा हरिसिंह असमंजस में थे। वे अपने राज्य को स्वतन्त्र रखना चाहते थे। दो महीने इसी कशमकश में बीत गये। इसका लाभ उठाकर पाकिस्तानी सैनिक कबाइलियों के वेश में कश्मीर हड़पने के लिए टूट पड़े...वहाँ सक्रिय शेख अब्दुल्ला कश्मीर को अपनी जागीर बनाकर रखना चाहता था। रियासत के भारत में कानूनी विलय के बिना भारतीय शासन कुछ नहीं कर सकता था। जब राजा हरिसिंह ने जम्मू कश्मीर को पाकिस्तान के पंजे में जाते देखा, तब उन्होंने भारत के साथ विलय पत्र पर हस्ताक्षर किये...इसके साथ ही भारत सरकार के आदेश पर सेना सक्रिय हो गयी। मेजर सोमनाथ शर्मा की कम्पनी को श्रीनगर के पास बड़गाम हवाई अड्डे की सुरक्षा की जिम्मेदारी दी गयी। वे केवल 100 सैनिकों की अपनी टुकड़ी के साथ वहाँ डट गये। दूसरी ओर सात सौ से भी अधिक पाकिस्तानी सैनिक जमा थे। उनके पास शस्त्रास्त्र भी अधिक थे पर साहस की धनी मेजर सोमनाथ शर्मा ने हिम्मत नहीं हारी। उनका आत्मविश्वास अटूट था। उन्होंने अपने ब्रिगेड मुख्यालय पर समाचार भेजा कि जब तक मेरे शरीर में एक भी बूँद खून और मेरे पास एक भी जवान शेष है, तब तक मैं लड़ता रहूँगा...दोनों ओर से लगातार गोलाबारी हो रही थी। कम सैनिकों और गोला बारूद के बाद भी मेजर की टुकड़ी हमलावरों पर भारी पड़ रही थी। 3 नवम्बर, 1947 को शत्रुओं का सामना करते हुए एक हथगोला मेजर सोमनाथ के समीप आ गिरा। उनका सारा शरीर छलनी हो गया। खून के फव्वारे छूटने लगे। इस पर भी मेजर ने अपने सैनिकों को सन्देश दिया... इस समय मेरी चिन्ता मत करो हवाई अड्डे की रक्षा करो दुश्मनों के कदम आगे नहीं बढ़ने चाहिए...यह सन्देश देते हुए मेजर सोमनाथ शर्मा ने प्राण त्याग दिये... उनके बलिदान से सैनिकों का खून खौल गया। उन्होंने तेजी से हमला बोलकर शत्रुओं को मार भगाया। यदि वह हवाई अड्डा हाथ से चला जाता, तो पूरा कश्मीर आज पाकिस्तान के कब्जे में होता। मेजर सोमनाथ शर्मा को मरणोपरान्त 'परमवीर चक्र' से सम्मानित किया गया। शौर्य और वीरता के इस अलंकरण के वे स्वतन्त्र भारत में प्रथम विजेता हैं। सेवानिवृत्त सेनाध्यक्ष जनरल विश्वनाथ शर्मा इनके छोटे भाई हैं ।

उनकी तुरबत पर नहीं एक भी दिया,
जिनके खूँ से जले थे चिरागे वतन।
आज महकते है मकबरे उनके,
जिन्होंने बेचे थे शहीदों के कफन।।

केन्द्रीय आर्य युवक परिषद की केन्द्र सरकार से माँग

स्वामी श्रद्धानन्द बलिदान भवन

नया बाजार दिल्ली को राष्ट्रीय स्मारक घोषित करो

जहां होता है भरपूर काम और प्रभु का गुणगान
आर्य युवक परिषद् है उसका नाम

अनिल आर्य का अभिनंदन

गुरुकुल खेड़ा खुर्द में आयोजित कार्यक्रम में आर्य समाज दंहसवप से भोपाल सिंह आर्य शॉल द्वारा स्वागत करते हुए।

गुरुकुल आश्रम आमसेना, उड़ीसा

14 जनवरी मकर संक्राति के पर्व पर गुरुकुल आश्रम आमसेना के संचालक स्वामी धर्मानन्द सरस्वती जी के द्वारा संचालित धर्म रक्षा अभियान के अंतर्गत कालाहांडी जिले के ग्राम पात्रवसा (आमापानी) में ईसाईमत में गये 200 श्रद्धालु सज्जनों ने आचार्य मनुदेव की प्रेरणा पर पुनः वैदिक धर्म ग्रहण किया। इस अवसर पर श्री विक्रम आचार्य (प्रमुख धर्म जागरण समन्वय) आदि ने वैदिक धर्म की महत्ता बताते हुए दीक्षित बंधुओं को आशीर्वाद दिया। इस कार्यक्रम का संचालन डॉ. कुंजदेव मनीषी जी के द्वारा किया गया।

केन्द्रीय आर्य युवक परिषद् द्वारा 2020 से 760वां वेबिनार सम्पन्न

त्रिदिवसीय अन्तर्राष्ट्रीय आर्य वेबिनार का भव्य शुभारंभ

नारी राष्ट्र की उन्नति का आधार है –उर्मिला सचदेवा न्यूजीलैंड
महर्षि दयानन्द ने महिलाओं को अधिकार दिये –विमलेश बंसल

शुक्रवार 30 जनवरी 2026, केन्द्रीय आर्य युवक परिषद के 48वें वार्षिकोत्सव पर राष्ट्रीय अध्यक्ष अनिल आर्य के सानिध्य में त्रिदिवसीय अन्तर्राष्ट्रीय आर्य महावेबिनार का आयोजन किया गया।कोरोना काल से 759 वाँ वेबिनार था। कार्यक्रम का शुभारंभ वैदिक विद्वान आचार्य अखिलेश्वर (हरिद्वार) ने राष्ट्ररक्षा यज्ञ से किया उन्होंने कहा कि वैदिक संस्कृति पुरातन व सर्वश्रेष्ठ है। द्वितीय सत्र में अन्तर्राष्ट्रीय आर्य महिला सम्मेलन का आयोजन किया गया।मुख्य वक्ता आचार्या विमलेश बंसल ने नारी सशक्तिकरण पर जोर देते हुए सभी को स्वामी दयानंद जी के पदचिन्हों पर चलने के लिए प्रेरित किया तथा नारियों को आगे बढ़ने की प्रेरणा दी।उन्होंने कहा कि आर्य समाज ने बाल विवाह,सती प्रथा जैसी कुरीतियों को बंद किया और विधवाओं को पुनर्विवाह के अधिकार दिऐ। मुख्य अतिथि न्यूज़ीलैंड से वैदिक विदुषी उर्मिला सचदेवा ने बताया की नारियों के अन्दर प्रबल शक्ति है उन शक्तियों का प्रयोग कर नारी अपने परिवार,अपने राष्ट्र,अपने धर्म के प्रति आगे बढ़कर कार्य करने को प्रोत्साहित होती है।उन्होंने स्वामी दयानंद जी का भी धन्यवाद करते हुए उन्हें नमन किया।उन्होंने अपने विचारों में सब को बताया कि नारी नर हृदय की आशा है,नारी को कंधे से कंधा मिलाकर चलना हैतभी राष्ट्र की उन्नति हो सकती है।इसलिए नारी तू आत्मनिरीक्षण कर और सबको आर्य बना।हमें वैदिक संस्कारों को विश्वस्तर पर फैलाना है। प्रो.करुणा चांदना ने बताया कि आर्य समाज ही एक ऐसी संस्था है जहां पर नर और नारी सभी को समान रूप से सम्मान प्राप्त होता है।नारी शक्ति की देवी है,नारी तू आगे बढ़।उन्होंने आगे कहा कि यदि नारी स्वस्थ है तो पूरा परिवार स्वस्थ और निरोगी रह सकता है।बिमला आहूजा ने अपने सुंदर विचारों द्वारा स्वामी जी का धन्यवाद किया और नारियों को आगे बढ़ने की प्रेरणा दी। आर्य नेत्री जनक अरोडा ने स्वामी दयानंद जी की विचारधारा को वेदों के चार स्तंभ के आधार पर रखते हुए बताया कि समानता,वसुदेव कुटुंबकम,किसी भी कार्य का प्रमाण रूप और धर्म के वास्तविक स्वरूप इन विचारों को अपनाएं।उन्होंने बताया कि धर्म के लक्षणों को जीवन में उतार कर हमें आगे बढ़ना होगा।नारी को अपने बच्चों को गर्भ से ही अच्छे संस्कार देना प्रारंभ कर देना चाहिए। इस अवसर पर श्रीमती पुष्पा बंसल,डा आर के आर्य,डा सौरभ आर्य,महेन्द्र भाई ने भी अपने विचार रखे। गायिका पिंकी आर्या,जनक अरोड़ा, प्रतिभा कटारिया,कुसुम भंडारी, प्रवीण आर्य ने मधुर भजनों के द्वारा सभी का मन मोह लिया। मंच संचालिका श्रुति सेतिया ने नारियों को आगे बढ़ने और समाज को जागृत रहने की दिशा में अपने को तथा प्रेरणादाई कविताएं भी सुनाई। केन्द्रीय आर्य युवक परिषद के राष्ट्रीय अध्यक्ष अनिल आर्य ने धन्यवाद ज्ञापन व प्रदेश अध्यक्ष प्रवीण आर्य ने शांति पाठ के साथ कार्यक्रम संपन्न किया।

अन्तर्राष्ट्रीय आर्य महावेबिनार का दुसरा दिन

हमारी संस्कृति की रक्षा गुरुकुलीय पद्धति से ही हो सकती है –आर्य रवि देव गुप्ता
युवा ही राष्ट्र का भविष्य –विमल चड्ढा (नेरोबी)
राष्ट्रीय एकता अखंडता की मिसाल थे स्वामी श्रद्धानन्द –गवेन्द्र शास्त्री

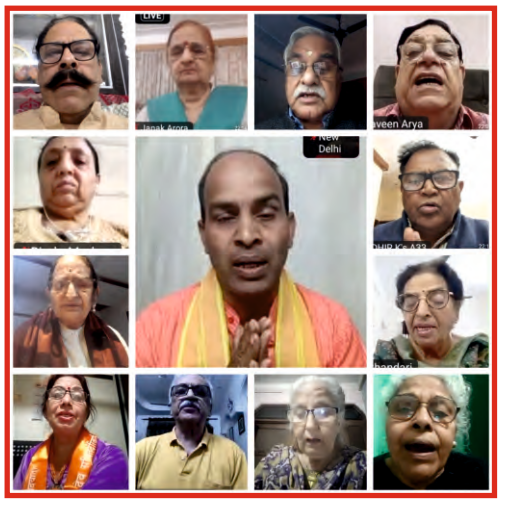

शनिवार,31 जनवरी 2026,केन्द्रीय आर्य युवक परिषद के 48 वें वार्षिकोत्सव के उपलक्ष्य में त्रिदिवसीय अन्तर्राष्ट्रीय आर्य महावेबिनार के दूसरे दिन का आयोजन जूम पर ऑनलाइन किया गया।वैदिक विद्वान आचार्य अखिलेश्वर जी महाराज (हरिद्वार) ने राष्ट्र रक्षा यज्ञ से शुभारंभ किया, उन्होंने राष्ट्र रक्षा के सुरक्षा मन्त्रों से आहुतियां डलवाई।उनके साथ आर्य परिवारों ने अपने अपने घर पर एक साथ यज्ञ किया। द्वितीय सत्र स्वामी श्रद्धानंद बलिदान शताब्दी सम्मेलन में मुख्य वक्ता रवि देव गुप्ता ने कहा कि स्वामी श्रद्धानन्द स्वामी दयानन्द के ऐसे शिष्य थे जिन्होंने ऋषियों की परम्पराओं का पालन करते हुऐ गुरुकुल कांगड़ी की स्थापना हरिद्वार में की।उन्होंने बताया कि लार्ड मैकाले की शिक्षा पद्धति के द्वारा देश का विकास नहीं हो सकता,बच्चों में संस्कार व हमारी संस्कृति की रक्षा गुरुकुलीय पद्धति से ही हो सकती है।उन्होंने बताया कि स्वामी श्रद्धानन्द के प्रति सच्ची श्रद्धांजलि यही होगी कि हम अपने जीवन में परमात्मा के प्रति श्रद्धा रखें और आर्य समाज के उत्थान में अपना तन मन और धन लगा दें। विमल चड्ढा (नेरोबी) ने कहा कि युवा ही देश का भविष्य हैं,उन्हें कैसे हम आर्य समाज से जोड़े?इस पर चिंतन करना है।यदि घर–घर यज्ञ का प्रचार किया जाए तो इससे परिवार,समाज और राष्ट्र मजबूत बनेगा।स्वामी दयानंद के मार्ग पर चलकर हम अपने आप को गौरवान्वित महसूस करते हैं। न्यूजीलेंड से हरीश सचदेवा ने कहा कि हम उच्च नीच के भेदभाव से उपर उठकर जातिवाद के जहर को समाप्त कर कार्य करें। वैदिक प्रवक्ता आचार्य गवेन्द्र शास्त्री ने कहा कि स्वामी श्रद्धानन्द जी का जीवन भटकते लोगों के लिये प्रकाश पुंज के समान है।हमें उनके जीवन से प्रेरणा लेकर देश की एकता अखंडता के लिये कार्य करना चाहिए,यह गर्व की बात है कि आर्य समाज के लोगों में देश भक्ति का जज्बा कूट कूट कर भरा हुआ है जो अत्यंत प्रशंसनीय है।स्वामी श्रद्धानन्द राष्ट्रीय एकता और अखण्डता की ज्वलंत मिसाल थे। केन्द्रीय आर्य युवक परिषद के राष्ट्रीय अध्यक्ष अनिल आर्य ने कहा कि वर्तमान परिवेश में समाज के ज्वलंत मुद्दों का हल कर के आर्य समाज विश्व मे नेतृत्व प्रदान कर सकता है।साथ ही नई पीढ़ी को सुसंस्कारित करने को एक लक्ष्य बना कर चलना होगा। मेट्रोपोलिटन मजिस्ट्रेट ओम सपरा ने स्वामी श्रद्धानंद की वह बात याद दिलाई जिसमें उन्होंने कहा था कि हमें लेखन और व्याख्यान का कार्य रुकना नहीं चाहिए।आजकल हम सोशल मीडिया का प्रयोग कर इस कार्य को गति दे सकते हैं। केन्द्रीय आर्य युवक परिषद के महामंत्री महेंद्र भाई,राम कुमार आर्य, प्रेम हंस (ऑस्ट्रेलिया),देवेन्द्र भगत, सुरेश आर्य,दुर्गेश आर्य, द्रोपदी तनेजा, प्रतिभा कटारिया ने भी मार्गदर्शन दिया। गायिका पिंकी आर्या,प्रवीण आर्य, संतोष श्रीधर,कुसुम भंडारी,सुदेश आर्या,जनक अरोड़ा,रजनी गर्ग, बिंदु मदान आदि ने स्वामी श्रद्धानंद –गुणगान अपने गीतों के माध्यम से करके श्रोताओं को मंत्रमुग्ध कर दिया।

सम्पादक: **अनिल कुमार आर्य** द्वारा केन्द्रीय आर्य युवक परिषद् के लिए **मंयक प्रिंटर्स**, 2199/63, नाईवाला, करोलबाग, दिल्ली-5 दूरभाष : 41548503 **मो.** : 9810580474
से मुद्रित व परिषद् कार्यालय आर्य समाज टी-176-177, कबीर बस्ती, दिल्ली-7 से प्रकाशित, **प्रबन्धक** : दिनेश आर्य, मोबाइल : 9911587765, देवेन्द्र भगत, मोबाइल : 09958889970